प्रातः क्लास 13-12-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप को ही बच्चों को समझाना है। ऐसे नहीं कि बच्चे बैठ बाप को समझा सकते हैं। नहीं। बाप ही बच्चों को समझाते हैं। बच्चे मन्मनाभव। बच्चे नहीं कहेंगे शिव बाबा मन्मनाभव। यूं भल बच्चे आपस में बैठ चिट-चैट करते हैं, राय निकालते हैं। परन्तु भूल बात यह है महामंत्र जो बाप ही देते हैं। गुरु लोग मंत्र देते हैं ना। यह रिवाज कहां से निकला। यह जो बाप नई सृष्टि रचने वाला है वही पहले2 मंत्र देते हैं मन्मनाभव। इसका नाम ही है वसीकरण मंत्र अर्थात माया पर जीत पाने का मंत्र। यह कोई अन्दर में जपना नहीं है। यह तो समझाना होता है बाप अर्थ सहित समझाते हैं। भल गीता में है परन्तु अर्थ कोई नहीं समझते हैं। गीता का एपीसुड भी है परन्तु सिर्फ नाम बदली कर दिया है। कितने ढेर पुस्तक आदि भक्ति मार्ग आदि में बनते रहते हैं। वास्तव में यह तो औरली बाप बच्चों को समझाते हैं। बाप की आत्मा में ज्ञान है। बच्चों की आत्मा ही ज्ञान धारण करती है। बाकी सिर्फ सहज कर समझाने लिये यह चित्र आदि बनाई जाती है। तुम बच्चों की बुधि में यह सारा नालेज है। तुम जानते हो बरोबर आदि सनातन एक ही देवी-देवता धर्म था। इस समय तो बहुत धर्म है। यह जो सतोप्रधान नई दुनिया थी सो अभी तमोप्रधान हो गई है। यह भी चित्र तुम दिखला सकते हो। और सभी जो धर्म हैं उन्हों के भी नक्शे तुम रख सकते हो। कितने ढेर धर्म हैं। बोलो यही भारत था जब कि एक ही आदि सनातन देवी देवता धर्म था और कोई खण्ड नहीं था। फिर बाद में और खण्ड खड हुई है। तो वह भी चित्र एक कोने में रख देना चाहिए। जहां तुम दिखलाते हो भारत में इनका राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था। अभी तो कितने धर्म हैं। फिर यह सभी न रहेंगे। यह है बाबा का प्लैन। उन विचारों को कितनी चिन्ता लगी हुई है। गवर्मेन्ट तो इन बातों को समझने वाली नहीं है। तुम बच्चे समझते हो यह तो बिल्कुल ही ठीक है। लिखा हुआ भी है बाबा आकर ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। किसकी? नई दुनिया की। जमुना का कंठा यह है कैपीटल। यहां एक ही धर्म होता है। झाड़ बिल्कुल छोटा है। इस झाड़ का ज्ञान भी बाप देते हैं। चक्र का भी ज्ञान देते हैं। सतयुग में एक ही भाषा होती है। और कोई भाषा नहीं होगी। तुम सिध कर सकते हो एक ही भारत था। एक ही राज्य एक ही भाषा थी। राम-राज्य भी नहीं था। पैराडाईज हैविन में सुख-शान्ति थी। दुःख का नाम-निशान नहीं था। हेल्थ वैल्थ हैपीनेस सभी थी। भारत नया था तो फिर आयु भी बड़ी थी। क्योंकि पवित्रता थी। पवित्रता में हिष्ट-पुष्ट रहते हैं। अपवित्रता में तो देखो मनुष्यों का क्या हाल होजाता है। बैठे2 अकाले मृत्यु हो जाती है। गर्भ के अन्दर भी मर पड़ते हैं। दुःख कितना होता है। जवान भी मर पड़ते हैं। वहां अकाले मृत्यु होता नहीं। फुल एज चलती है। पीढ़ी तक अर्थात बूढ़ापे तक कोई मरते नहीं हैं। किसको भी समझाओ तो बुधि में यह बिठाना है बेहद के बाप को याद करो। वही पतित-पावन है। वही सदगति दाता है। तो तुम्हारे पास वह नक्शा भी होना चाहिए। तो सिध कर समझा सकेंगे आज का नक्शा यह है कल का नक्शा यह है। कोई तो अच्छी रीत सुनते हैं यह पूरा समझाना होता है। यह भारत अविनाशी खण्ड है। जब यह देवी देवता धर्म था तो और कोई धर्म था नहीं। अभी यह आदि सनातन देवी देवता धर्म है नहीं। यह ल०ना० कहां गये? कोई बता न सकेंगे। कोई में ताकत नहीं बताने की। तुम बच्चे अच्छी रीत रहस्य युक्त समझाते हो। इसमें मुंझने की तो दरकार ही नहीं। तुम सभी कुछ जानते हो और फिर रिपीट भी कर सकते हो। तुम कोई से भी पूछ सकते हो यह कहां गये? तुम्हारे प्रश्न सुन कर बावरे हो जावेंगे। तुम तो निश्चय से बतलाते हो यह कैसे 84 जन्म लेते हैं। बुधि में तो है ना। तुम झट से कहेंगे सतयुग नई दुनिया में हमारा राज्य था। एक ही आदि सनातन देवी देवता धर्म था। दूसरा कोई धर्म जाते नहीं। एवर नथींग न्यु। हरेक चीज सतोप्रधान होती है। सोना भी अथाह होता है। कितना सहज सोना भी मिलता होगा। जो फिर ईंटें मकान आदि बनते होंगे। वहां तो सभी कुछ सोने का होता है। खानियां सभी तुम्हारी होंगी। ईमीटेशन तो निकालेंगे नहीं। जब कि रीयल बहुत है। यहां तो रीयल का नाम नहीं। ईमीटेशन

(बनावटी) का कितना जोर है। इसलिये कहा जाता है झूठी माया झूठी काया.... सम्पति भी झूठी है। हीरे मोती ऐसे ऐसे किस्म के निकलते हैं जो पता ही नहीं पड़ सकता कि यह सच्चा है वा झूठा है। शो इतना होता है जो परख नहीं सकते हैं यह झूठा है वा सच्चा। शुरू में तो बहुत ठगा कर आते थे। पहले नकली थी लाल माणिक। फिर हीरे। अभी तो ऐसी झूठी हीरे निकलते हैं जो बिल्कुल ही मनुष्य मुंझ जाते हैं। परख नहीं सकते। भारी भी बहुत कर देते हैं। जो फर्क का पता नहीं पड़ता। वहां तो यह झूठी चीजें आदि नहीं होती। विनाश होते हैं तो सभी धरती के नीचे चली जाती है। इतने बड़े2 पत्थर हीरे आदि मकानों में लगाते होंगे। वह सभी कहां से आता होगा। कौन कट करते होंगे। इण्डिया में भी होशियार बहुत हैं। असल में सबसे तीखे वैल्जम के तरफ हैं। यहां भी कट होती है। एक्सपर्ट हो जाते हैं ना। यहां होशियार होकर वहां भी होशियारी लेकर जावेंगे। आकर कारीगर बनेंगे हीरा काटने लिये। नाज आदि रफ हीरे के थोड़ेही बनेंगे। वह तो बिल्कुल रिफाईन सच्चे हीरे होते हैं। यह बिजली टैलीफोन, मोटरें आदि पहले कुछ भी नहीं था। बाबा के इस लाईफ के अन्दर ही क्या2 निकला है। 70-80 वर्ष हुये हैं जो यह सभी निकले हैं। वहां तो बड़े एक्सपर्ट होते हैं। अभी तक सीखते रहते, होशियार होते रहते हैं। यह भी बच्चों को सा० कराया हुआ है वहां हैलीकोप्टर जो फुल प्रुफ होते हैं। बच्चे भी सतोप्रधान बड़े तीव्र बुधि वाले होते हैं। आगे थोड़ा चलो तुमको सब सा० होंगे। अपने देश नजदीक आते हैं तो झाड़ दिखाई पड़ते हैं ना। अन्दर में खुशी रहती है अभी घर आया कि आया। अभी आकर पहुंचे हैं। पिछाड़ी में तुमको भी ऐसे सा० होते रहेंगे। जो जो अच्छे महावीर होंगे। ठक्का लगने से उनकी प्राण नहीं निकलेगा। बच्चे समझते हैं मोस्ट बिलवेड बाबा है। वह है ही सुप्रीम आत्मा। उनको सभी याद भी करते हैं। भक्ति मार्ग में तुम याद करते थे ना परमात्मा को। परन्तु यह मालूम था कि वह छोटा है वा बड़ा है। गाते भी हैं चमकता है अजब सितारा भृकुटि के बीच में। तो जरूर बिन्दी मिसल होगा ना। उनको ही कहा जाता है सुप्रीम आत्मा यानि परमात्मा। उनमें खुबियां तो सभी है ही। ज्ञान का सागर है, क्या ज्ञान सुनावेंगे। वह तो जब सुनावे तब तो मालूम पड़े ना। तुम भी पहले जानते थे क्या। सिर्फ भक्ति ही जानते थे। अभी तो समझते हो बन्डर है। आत्मा को भी इन आंखों से देख नहीं सकते हैं। तो बाप को भी भूल जाते हैं। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है जिसको विश्व का मालिक बनाते उनका नाम डाल देते। और सुनाने वाले का नाम गुम कर देते हैं। श्रीकृष्ण को तो त्रिलोकी नाथ बैकुण्ठ नाथ कह दिया है। अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। उनकी बड़ाई दे देते और शिव बाबा जिसने उनको ऐसा बनाया उनको भितर ठिक्कर में ठोक दिया है। मनुष्यों को कुछ भी ज्ञान नहीं है। समझते हैं भक्ति करने भगवान मिलेगा। अरे तुम तो कहते हो हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ तो तो इससे सिध है भक्ति करते करते तुम पतित बने हो ना। तब तो बाप कहते हैं मैं इन साधुओं का भी उधार में आता हूं। कितनी उन्हों की बड़ाई करते हैं। कितना पैसा खर्च करते हैं। अहंकार कितना होता है। यह तमोप्रधान। सतोप्रधान तो रहते ही हैं सतयुग में। कितनी उन्हों की की बड़ी सवारी निकलती हैं। यह है भक्ति मार्ग के रसम रिवाज। प्राईमिनिस्टर आदि ऐसे करते हैं क्या। सन्यासी लोग शंकराचार्य आदि कितना भभका दिखाते हैं। इन्हों से गवर्मेन्ट भी डरते हैं कि कहां सराप न देदे। इन पर कुछ कहानी भी बैठ बनाई है। कि सराप मिल गया.....। ऐसे कब होता नहीं हैं। यह बातें बैठ बना भगवान में इतनी ताकत है वह हजारों सूर्यों से भी तेज है। भंभोर को आग लगा दी मनुष्यों को जलाने में क्या देरी करेंगे। सभी कुछ भस्म कर दिया। ऐसी2 बातें बना दी है। बच्चों बच्चों को जलाऊंगा कैसे। यह तो हो नहीं सकता। बच्चों को बाप कब डिस्ट्राय करेंगे। ड्रामा में रची हुई है। बाकी डिस ट्राय कोई करते थोड़ेही हैं। यह ड्रामा में पार्ट है। पुरानी दुनिया खत्म से पढ़ना

13-12-92

पुरानी दुनिया के विनाश के लिये यह नेचरल कैलेमिटिज सभी काम करने वाले हैं। कितने जबरदस्त काम करने वाले हैं। ऐसे नहीं कि इन्हों को कोई बाप डायरेक्शन देते हैं कि विनाश करो। नहीं। धरती हिलती है अकाल पड़ती है भगवान कहते हैं क्या कि यह करो। कभी नहीं। यह ड्रामा में पार्ट है। बाप नहीं कहते हैं बम्स आदि बनाओ। यह सभी रावण की मत कहेंगे। यह बना बनाया ड्रामा है। रावण का राज्य है तो आसुरी बुधि बन जाते हैं। कितने मरते हैं आखीर में सभी जला देंगे। बाप थोड़ेही कहते हैं। यह बना बनाया खेल है। जो रिपीट होता रहता है। बाकी ऐसे नहीं शंकर की आंख खुलने से विनाश हो जाता है। इनको गाडली कैलेमिटिज भी कहेंगे। यह नेचरली है। अभी बाप तुम बच्चों को श्रीमत दे रहे हैं। कोई को दुःख आदि देने की बात नहीं। बाप तो है ही सुख का रास्ता बताने वाला। ड्रामा प्लैन अनुसार मकान तो पुराना होना ही है। जब देखेंगे इन को डर है गिरने का तो फिर नया बनावेंगे। बाप भी कहते हैं यह सारी दुनिया पुरानी हो गई है। यह खलास होनी है। आपस में लड़ते देखो कैसे हैं। आसुरी बुधि है ना। जब ईश्वरीय बुधि है तो कोई भी मारने आदि की बात ही नहीं। बाप कहते हैं मैं तो सभी का बाप हूं। हमारा सभी पर प्यार है। बाबा यहां देखते हैं फिर अनन्य बच्चों तरफ भी नजर जाती है। जो बाप को बहुत प्रेम से याद करते हैं। सर्विस भी करते हैं। यहां बैठे भी बाप की नजर सर्विसएबुल बच्चों तरफ चली जाती है कब देहरादुन कब भैरठ कब दिल्ली। जो बच्चे मुझे याद करते हैं मैं भी उन्हों को याद करता हूं। जो मुझे न भी याद करते हैं तो भी मैं उनको याद करता हूं। क्योंकि मुझे तो सभी को ले जाना है ना। हांमेरे द्वारा सृष्टि चक्र की नालेज को समझते हैं। नम्बरवार फिर वह ऊंच पद पावेंगे। यह बेहद की बातें हैं। वह टीचर आदि होते हैं। यह है बेहद का। तो बच्चों को अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं सभी का पार्ट एक जैसा हो नहीं सकता। इनका तो पार्ट था। परन्तु फलो करने वाले कोटों में कोऊ निकले। बाबा समझाते हैं ऐसे छोड़ना होता है। तो विश्व किशोर भी ऐसे ही छोड़कर आया। तुम तो भागे। यह तो क्लीयर कर निकले। भागने आदि की बात ही नहीं। तुम्हारी भट्ठी बननी थी। फिर उसमें कितने कच्चे निकले कोई पक्के निकले। भट्ठी में पुंगरे आगये हैं। कहते हैं ना बाबा हम सात दिन का बच्चा हूं। एक दो दिन का का बच्चा हूं। तो पुंगरे ठहरे ना। तो बाप हर बात समझाते रहते हैं। नदी भी क्रोसर पास कर आये थे। बाबा के आने से ही ज्ञान शुरु हुआ है। उनकी कितनी महिमा है। वह गीता के अध्याय तो तुम जन्म जन्मान्तर कितनी बार पढ़ी होंगी। परन्तु देखो कितना है कहां कृष्ण भगवानुवाच कहां शिव भगवानुवाच। रात दिन का फर्क है। झूठी गीता शास्त्र आदि पढ़ते झूठ खण्ड बन गया है। तुम्हारी बुधि में अभी है हम सच खण्ड में थे। सुख भी बहुत देखा। 3/4 सुख देखते हैं। बाबा ने ड्रामा सुख के लिये बनाया है न कि दुःख के लिये। यह तो बाद में मुसलमान जब आते हैं तब से तुमको दुःख मिला है। लड़ाई तो इतना जल्दी लग नहीं सकती। तुमको बहुत सुख मिलता है। आधा आधा हो तो इतना मजा न हो। वह तो जब धर्म स्थापन हो उनकी बहुत वृधि हो। नई2 आत्मायें आवें। बहुत लश्कर बने तब काम हो। अभी तो लड़ाईयां कितनी लगती रहती हैं। फिर 3½ सौ वर्ष तो कोई लड़ाई नहीं। बिमारी आदि नहीं। यहां तो देखो बिमारी पिछाड़ी बिमारी लगी हुई है। सतयुग में थोड़ेही ऐसे कीड़े आदि होंगे। जो अनाज खा लेवें। इसलिये उनका तो नाम ही है स्वर्ग। हैविन। तो तुमको वर्ल्ड का नक्शा भी रखना चाहिए। तो समझा कैसे अरब में भारत [illegible] था। और कोई धर्म नहीं था। फिर सम्पन्न से धर्म स्थापन करने वाले आये हैं। अभी तो तुम बच्चों को वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी का मालूम है। तुम्हारे जाते ही तो बाकी सभी कह देंगे नेती2 · हम बाप को नहीं जानते हैं। कह देते हैं उनका कोई नाम रूप भी है नहीं। नाम रूप नहीं तो फिर कोई देश भी नहीं हो सकता। मनुष्यों की बिल्कुल ही तुच्छ बुधि तुम बच्चों की है। शंकराचार्य भी शिव की पूजा करते हैं। सर्वव्यापी अगर है तो फिर क्यों नहीं फिर ठिक्करों भितरों -

की बैठ पूजा करें। अपनी पूजा कराते हैं। इन सभी बातों को अज्ञानता कहा जाता है। कुछ भी समझते नहीं। इतने पत्थर बुधि बन पड़े हैं। कहते भी हैं तुम तो ठिक्कर बुधि हो। वहां ऐसी गालियां आदि होती नहीं। तो बाप बैठ समझाते हैं मुझे जो याद करते हैं, प्यार करते हैं मैं भी उनको कितना प्यार करता हूं। मैं नई दुनिया कैसे बनाता हूं। फिर यह पुरानी दुनिया खत्म हो जाती है। पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली गाया जाता है ना। तुम जानते हो यह कोई नई दिल्ली थोड़ेही है। इनको तो कब्रस्तान कहा जाता। नई दुनिया है परिस्तान। मैं बच्चे काम चिक्षा पर बैठ भस्म हो गये हैं। मूर्द बन गये हैं। फिर बाप आकर ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हैं। काम चिक्षा पर बैठने से रावण राज्य हो जाता है। फिर ज्ञान चिक्षा पर बैठने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हैं। कितना सहज समझाते हैं। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो परंतु बाप को याद करो। जिनको बन्धन आदि नहीं हैं वह झट ज्ञान उठा सकते हैं। इन में तो बाप ने प्रवेश किया है। ऐसे नहीं बाप ने छुड़ाया। जैसे कि वैराग्य आने लगा यह सृष्टि तो खत्म होनी है। विनाश देख लिया तो वैराग्य क्यों नहीं आवेगा। सन्यासियों को तो विनाश का साक्षात्कार होता नहीं है। यह तो समझते थे विनाश होने वाली चीज से दिल क्या लगावेंगे। इनको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। खत्म होने वाली चीज में प्रेम क्या रखना है। आत्माओं को बाप बैठ समझाते हैं यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। अभी स्वर्ग को याद करो, बाप को और वर्से को याद करो। बाप को याद करेंगे तो वर्सा है ही। बन्धनाभव का अर्थ भी है मुझे याद करो तो तुम चतुर्भुज बनेंगे। अर्थात महाराजा महारानी बनेंगे। कितना सहज समझाते हैं। विनाश तो होना ही है। इसलिये यह सभी छोड़ना है। फिर नई दुनिया में तुम यह बनेंगे। तो विनाश के पहले ही छोड़ देना पड़े ना। बाबा की खुशी का पारा चढ़ गया और वैराग्य आ गया सारी दुनिया से तुमको भी वैराग्य होता है। ज्ञान-भक्ति फिर है वैराग्य। यह सभी विनाश होने वाले हैं। अभी तो हमको वापस घर जाना है। इसके लिये पुरुषार्थ करना है। यह पुरानी दुनिया विनाश हो जावेगी। फिर हम नई दुनिया में बाबा शान्तिधाम जावेंगे। स्वीट बाप स्वीट होम स्वीट राजधानी को ही याद करते रहना है। बाप तुम बच्चों को भी कहते हैं अभी नई दुनिया में चलना है तो बाप को और नई दुनिया को याद करो। फिर भी बुधि और और तरफ चली जाती है। बाप कहते हैं दिन को तो भल धंधा आदि करो। रात फिर मेरे बन प्रभात रे। प्रभात (सुबह) को शिव बाबा को याद करो। हे आत्मा, हे मुझ आत्मा के बन प्रभात को बाप को याद करो। यह अभी की ही बात है। भक्ति में इनका अर्थ थोड़े ही समझते हैं। मुख से कुछ आवाज भी नहीं करना है। बाप को याद करना है। बेहद बाबा है यह तो परिचय मिल गया है। बाप कहते हैं मुझे याद करेंगे तो तुम स्वर्ग में चलेंगे। औरों को परिचय देंगे। तो ऊंच पद पावेंगे। सवेरे में बड़ा मज़ा आता है। चाहे उठकर बैठो चाहे घूमो-फिरो बाप याद करो। यह तो जानते हो विनाश जरूर होना है। फिर हम जावेंगे अपने घर। कपड़े तो तुम यह हो ना। कल्प2 तुमको यही कपड़े यही फिचर्स मिलते रहते हैं। यह बेहद का ड्रामा है जिसको अच्छी समझना है। एम आदि तो अथाह हैं। उनको कितना याद करेंगे। बाप को याद किया तो गोया झाड़ को किया। इसलिये बाप कहते हैं बन्धनाभव। बाप को और नई दुनिया को याद करो। ऐसे ऐसी कोई बात नहीं जो कुछ समझ न सके। अक्षर ही दो हैं। स्वर्ग में जाना है तो दैवी गुण भी धारण करनी है। सेन्टर बच्चे विगर कहे कि आपेही धारण करेंगे। बनना ही ऐसा (लक्ष्मी) है तो दैवी गुण जरूर धारण करनी ना। कितना अच्छी रीत रोज2 सभी सेन्टर्स के बच्चों को समझाते हैं।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

:-शिव बाबा याद है:-